14/15 अगस्त, 1947 की अर्धरात्रि को भारत की आजादी में प्रारब्ध एवं कालचक्र की भूमिका-एक गवेषणात्मक अध्ययन

बीज शब्द : *स्वतंतत्रता, प्रारब्ध, कालचक्र, भारत की आजादी, राजनैतिक परिस्थिति*

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
शोध संचयन

भारत की तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों को देखते हुए लार्ड माउन्टबेटन ने भारत की खण्डित आजादी को मूर्त रूप देने हेतु अपनी योजना को प्रकाशित करवाया। माउन्टबेटन योजना के अनुसार सत्ता हस्तांतरण की तरीख जून 1948 के वजाय 15 अगस्त 1947 कर दी गयी। भारत एवं पाकिस्तान के पास मात्र यह विकल्प था कि वे 14 अगस्त की अर्धरात्रि से 15 अगस्त की अर्धरात्रि तक सत्ता हस्तांतरित कर लें। भारतीय राजनीतिज्ञ निजी जीवन में जब ज्योतिष के महत्त्व को स्वीकार करते थे, तो उन्होंने देश और समाज के संदर्भ में भी इस विधका उपयोग किया तथा 15 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि को तुलनात्मक उचित मुहूर्त माना। पाकिस्तान ने 14 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि में सत्ता संभाल ली, जबकि भारत ने ज्योतिष आध ार पर 15 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि को उचित समय चुनकर सत्ता प्राप्त की। विचारकों की मानें एवं तात्कालीन परिस्थितियों का आंकलन करें तो प्रारब्ध एवं कालचक्र की भूमिका के कारण ही भारत पाकिस्तान से अधिक उन्नत तथा संगठित है।

डॉ० संजय कुमार सिंह
सचिव
उ०प्र० उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग
इलाहाबाद

अगर ऐतिहासिक घटनाओं पर हम नजर डालें तो इतिहास के छात्र होने के नाते यही कहेंगे कि भारत की तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों को देखते हुए ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने 20 फरवरी 1947 को यह घोषणा की कि ब्रिटिश सरकार जून, 1948 तक भारत की सत्ता भारतवासियों को हस्तांतरित कर देगी और इस उद्देश्य से उन्होंने बेवल के स्थान पर लार्ड माउण्टवेटन को भारत का नया वायसराय नियुक्त किये जाने की भी घोषणा की। उक्त घोषणा के क्रम में 24 मार्च, 1947 को लार्ड माउण्टबेटन ने भारत के नये वायसराय के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। पदभार ग्रहण करते ही उन्होंने कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के नेताओं से विचार-विमर्श कर इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कांग्रेस और मुस्लिम लीग के मध्य अब समझौता हो पाना संभव नहीं है तथा सत्ता हस्तांतरण के कार्य को जून 1948 तक रोका भी नहीं जा सकता। उन्होंने पं0 नेहरू और सरदार पटेल से आग्रह किया कि वे जिन्ना एवं मुस्लिम लीग की मांग, भारत विभाजन को स्वीकार कर लें। तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों के दृष्टिगत् लार्ड माउन्टबेटन के प्रस्ताव से कांग्रेस पार्टी सहमत हो गई। तदन्तर भारत की राजनैतिक समस्या के स्थायी समाधान हेतु लार्ड माउन्टबेटन 18 मई, 1947 को ब्रिटेन गए और 3 जून, 1947 को वहाँ से वापस लौटकर उन्होंने खंडित आजादी को मूर्त रूप देने हेतु अपनी योजना को प्रकाशित करवाया। माउन्टबेटन योजना के अनुसार सत्ता हस्तान्तरण की तारीख जून 1948 के बजाय 15 अगस्त, 1947 कर दी गयी। भारत एवं पाकिस्तान के पास मात्र यह विकल्प था कि वे 14 अगस्त की अर्धरात्रि से 15 अगस्त की अर्धरात्रि तक सत्ता हस्तांतरित कर लें। 14 अगस्त, 1947 की अर्धरात्रि को पाकिस्तानी समयानुसार 23.21 बजे आजाद पाकिस्तान के प्रथम राष्ट्राध्यक्ष के रूप में मोहम्मद अली जिन्ना ने कराची में शपथ ली जिसे ब्रिटिश हाई कमिश्नर ने उन्हें सत्ता सौंपी और इस प्रकार 14 अगस्त, 1947 को पाकिस्तान का जन्म हुआ। जबकि 15 अगस्त की तिथि प्रारंभ होते ही भारतीय समयानुसार ठीक 00.01 बजे आजाद भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में पं0 नेहरू ने नई दिल्ली मेंशपथ ली जिसे वायसराय लार्ड माउन्टबेटन ने उन्हें सत्ता सौंपी और इस प्रकार भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्ति मिली। शपथ लेते ही पं0 नेहरू ने संसद के केंद्रीय कक्ष में घोषणा की कि ''कितने ही वर्ष पूर्व हमने भाग्य से भेंट करने का निश्चय कर लिया था अब वह समय आ गया है जब हम इसको पूरा करेंगे। आधी रात की इस घड़ी में जब पूरी दुनिया सो रही है भारत जागकर स्वतंत्र जीवन प्राप्त करेगा। यह बहुत अच्छी बात है कि इस पवित्र क्षण में हम भारत और उसकी जनता की सेवा

और उससे भी बढ़कर मानवता की सेवा की सौगन्ध लेते हैं।''

अब यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि जब सत्ता हस्तांतरण की तिथि 14 अगस्त की अर्धरात्रि से 15 अगस्त की अर्धरात्रि तक का समय नियत था, तब 14 अगस्त की अर्धरात्रि को ही जब पूरी दुनिया सो रही थी, रात के अंधेरे में सत्ता हस्तांतरण जैसे पुनीत कार्य को क्यों सम्पन्न किया गया? वह भी तब जब भारत धार्मिक परम्पराओं का देश रहा है, जहाँ तिथि का आरम्भ सूर्योदय से माना जाता है अर्थात् उदयातिथि को ही आधार मानकर कोई भी मांगलिक कार्य सम्पन्न किया जाता है। अत: यह कार्य 15 अगस्त की सुप्रभात में भी हो सकता था, जब सम्पूर्ण भारत जाग रहा होता और भारत की जनता आजादी के उस क्षण को अपने आंखों से देख रही होती, जिसका उन्हें युगों-युगों से इंतजार था। क्या इसके पीछे तत्कालीन राजनेताओं की यथाशीघ्र सत्ता पाने की व्यक्तिगत अकुलाहट थी अथवा आजादी के लिये संघर्ष करते-करते थक चुके और धैर्य समाप्त हो चुके हमारे राजनेताओं की नैराश्य की परिणति थी जिसके कारण वे सत्ता प्राप्ति के लिये कुछ घंटे भी इंतजार करने की स्थिति में नहीं थे या इसके पीछे सच कुछ और था? इस संबंध में भारतीय एवं पाश्चात्य मार्क्सवादी इतिहासकार इसे महज एक सामान्य घटना स्वीकार करते हैं और इसके पक्ष में वे अपना-अपना तर्क भी प्रस्तुत करते हैं जबकि, वास्तव में इसके पीछे सच्चाई कुछ और थी, जिसे बहुत कम लोग जानते हैं। वह सच्चाई ज्योतिषीय बिन्दु से संबंधित थी और वह ज्योतिषीय रहस्य से जुड़ा हुआ था, जहां वे पहुंचने की कोशिश ही नहीं किये और वे करते भी नहीं क्योंकि वे तथाकथित बुद्धिजीवी जो ठहरे। वे न तो ज्योतिष के वैज्ञानिक सच को जानने की चेष्टा किये और न ही इसके पीछे छुपी नियति के रहस्यमयी लीला को ही समझने की कोशिश किये। नियति के नैसर्गिक सच को और प्रकृति के रहस्यमयी खेल को प्रारब्ध एवं कालचक्र के चश्में से देखकर ही जाना/समझा जा सकता है और इस कार्य को ज्योतिष के वैज्ञानिक पक्ष को गहरायी से समझने वाला ज्योतिषी ही कर सकता है।

तत्समय नियति ने ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर दीं थीं कि 14/15 अगस्त की अर्धरात्रि में भारत को खंडित आजादी ही मिलनी थी और दो अलग-अलग राष्ट्र के रूप में भारत एवं पाकिस्तान का जन्म होना था। यह नियति का ऐसा अकाट्य सच था, जिसे तत्समय चाहकर भी रोका नहीं जा सकता था। यदि वास्तव में भारत का विभाजन रोक पाना संभव होता तो आजादी के पूर्व से ही अखंड भारत की राजनैतिक परिस्थितियाँ वैसी ही बनती, किन्तु परिस्थितियाँ वैसी नहीं बनी और 14/15 अगस्त की अर्धरात्रि में भारत को खंडित आजादी मिली। यदि नियति भारत को खंडित आजादी देने के पक्ष में नहीं होती तो समय रहते ही श्री मोहम्मद अली जिन्ना एवं पं0 जवाहर लाल नेहरू के मध्य समझौता अवश्य हो जाता। यही नहीं, खंडित आजादी के पक्षकार कैंसर पीड़ित श्री मोहम्मद अली जिन्ना की मृत्यु (11.09.1948) 15 अगस्त 1947 के पूर्व भी हो सकती थी और ऐसा होने पर भारत को खंडित होने से बचाया जा सकता था, किन्तु ऐसा नहीं हुआ। नियति के रहस्यमयी लीला को अन्य दृष्टान्तों से भी समझा जा सकता है, जैसे-महाभारत का युद्ध यदि रोके जाने योग्य होता तो उस युद्ध को उसे प्रारम्भ होने से पूर्व ही रोक दिया जाता, किन्तु चाहकर भी ऐसा नहीं हो सका। वह भी तब, जबकि उस युद्ध में एक से बढ़कर एक विद्वान महापुरुष उपस्थित थे और कोई भी उस युद्ध के पक्ष में नहीं था। गंगापुत्र भीष्म, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, आचार्य विदुर एवं युधिष्ठिर जैसे विद्वान महापुरुषों के अतिरिक्त साक्षात् भगवान श्रीकृष्ण स्वयं उस युद्ध में उपस्थित थे। किन्तु, उस युद्ध को रोका नहीं जा सका। यह जानते हुए भी कि इस धर्म युद्ध को रोक पाना संभव नहीं है, युधिष्ठिर के अनुरोध पर भगवान श्रीकृष्ण स्वयं दूत बनकर प्रश्नगत युद्ध को टालने के उद्देश्य से दुर्योधन के पास तीन बार गए, किंतु वे असफल रहे। कालचक्र की गति को न समझ पाने के कारण ही धर्मराज युधिष्ठिर जैसा विद्वान भी द्रुत क्रीड़ा में फंसकर अपना सब कुछ गवा दिया। विधाता द्वारा रचित समय की गति को स्वीकार कर लेने के कारण ही सारे महापुरुषों के समक्ष द्रोपदी का चीर हरण होता रहा और तत्समय उपस्थित गंगापुत्र भीष्म चाहकर भी कुछ न कर पाए। कालचक्र की गति एवं नियति के कारण ही निषादराज के समक्ष गंगापुत्र भीष्म को अपने पिता की खुशी के लिये आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन हेतु कठोर प्रतिज्ञा व्रत लेना पड़ा था। आलोच्य काल में पांडवों की भांति न कोई योद्धा, न कोई ज्ञानी अथवा विद्वान था, फिर भी पूर्वजन्म के संचित कर्म एवं संस्कार से निर्मित प्रारब्ध की व्यवस्था के अन्तर्गत ही उन्हें जंगल-जंगल भटकते हुए अज्ञातवास तक का जीवन व्यतीत करना पड़ा था और न जाने कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। जबकि, बुद्धिहीन एवं अहंकारी, दुर्योधन जैसा व्यक्ति राजा बनकर समस्त राजसुख प्राप्त करता रहा। कर्ण जैसे महान योद्धा और महान दानी को सम्पूर्ण जीवन विभिन्न संघर्षों से जूझना पड़ा और उन्हें हर समय विभिन्न परीक्षाओं से गुजरना पड़ा। न चाहते हुए भी उसे कौरवों का साथ देना पड़ा तथा भारतीय समाज में उसे वह स्थान नहीं मिल पाया, जिसके लिये वह वास्तव में हकदार था। कुरूक्षेत्र के मैदान में भगवान श्रीकृष्ण ने जब अपना विराट रूप धारण कर कुंती पुत्र अर्जुन को नियति के सच से साक्षात्कार करवाया था और ज्ञान, भक्ति एवं कर्म का उपदेश देकर उन्हें धर्मानुसार कर्मपथ पर चलने हेतु प्रेरित किया था, तब न चाहते हुए भी अर्जुन जैसे महान योद्धा को प्रारब्ध के समक्ष नतमस्तक होकर,

नियति के सच को सहज भाव से स्वीकार कर उसे गले लगाना पड़ा था। तत्समय अर्जुन को सभी महान योद्धा पूर्व से ही मृत अवस्था में दिखलायी पड़े, किन्तु उन सभी सगे-संबंधियों के मृत रूप में उन्हें अपना पुत्र अभिमन्यु मृत दिखलायी नहीं पड़ा। यदि वैसा न होता तो संभवत: अर्जुन युद्ध के लिए तैयार ही न होते। सीता स्वयंवर के समय राजा जनक द्वारा समकालीन सभी राजाओं को आमंत्रित किया जाना, किन्तु राजा दशरथ को निमंत्रण न भेजा जाना, फिर भी गुरू विश्वामित्र के साथ उनके दोनों पुत्र भगवान राम एवं लक्ष्मण का वहाँ पहुँच जाना नियति के पूर्व निर्धारित विधन को ही प्रमाणित करता है। उस सीता स्वयंवर को विजित करने में जब सारे योद्धा असफल रहे और बिन बुलाये मेहमान भगवान श्रीराम जब उस स्वयंवर को जीतने में सफल रहे, तब राजा जनक को भी नियति के सच और प्रारब्ध एवं कालचक्र की लीला को स्वीकार करना पड़ा था। राजा दशरथ के न चाहने पर भी पत्नी कैकेयी के हठ के कारण पुत्र श्रीराम को राजतिलक की जगह 14 वर्ष का बनवास प्राप्त होना, पुत्र के बनवास के वियोग में पिता श्री दशरथ का देहावसान होना, श्रीराम की इच्छा के धर्मपत्नी सीता का हरण होना और रावण जैसे विद्वान ब्राह्मण की हत्या श्रीराम के हाथों होना, यह सभी घटनाएं पूर्व निर्धारित नियति के विधान के अन्तर्गत ही था, जिसे चाहकर भी उक्त घटना को घटित होने से रोका नहीं जा सका। नोबल पुरस्कार विजेता रविन्द्रनाथ टैगोर की अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त काव्य गीतांजलि में कविता के माध्यम से एकात्मवाद पर प्रकाश डालते हुए मानव को प्रकृति का एक अहम अंग स्वीकार करते हुए नियति की सुन्दर व्याख्या की है। जब भी मानव नियति के सच को ठुकराकर अपने को प्रकृति से अलग समझते हुए अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने लगता है तब प्रकृति और मानव के मध्य संघर्ष आरंभ होता है और अन्ततोगत्वा प्रकृति की जीत होती है एवं नियति विजयी मानी जाती है। अब हम पुन: मुड़ते हैं आजादी का सच जानने की ओर।

16 अगस्त, 1946 की साम्प्रदायिक दंगों के बाद जब भारत का विभाजन रोकना कठिन हो गया तब भारत को खंडित आजादी की योजना लेकर लार्ड माउन्टबेटन आखिरी वायसराय के रूप में भारत आए और उनकी योजना को मूर्त रूप लेते ही यह तय कर लिया गया कि 14 अगस्त की अर्धरात्रि से 15 अगस्त की अर्धरात्रि के मध्य चौबीस घंटे के अन्दर भारत और पाकिस्तान जो भी समय तय करें, उसे सत्ता का हस्तांतरण कर दिया जाय। उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर पूरी प्रमाणिकता के साथ हम यह कह सकते हैं कि भारत ने ठीक अर्धरात्रि का समय चयनित किया था उसके पीछे तत्कालीन जाने-माने ज्योतिषियों की दखलंदाजी थी।

निजी जीवन में जब हम ज्योतिष के महत्त्व को स्वीकार करते है तो देश और समाज के संदर्भ में भी इस विद्या का उपयोग होना चाहिए। इसी भावना से प्रेरित होकर सत्ता हस्तांतरण की तिथि निर्धारित हो जाने के पश्चात् डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद जी (भारत के प्रथम राष्ट्रपति) उज्जैन के प्रसिद्ध ज्योतिषी पं0 सूर्य नारायण व्यास एवं सोलन के प्रसिद्ध ज्योतिषी पं0 हरदेवशर्मा त्रिवेदी के पास गए और उनसे सत्ता हस्तांतरण हेतु शुभ समय निर्धारित करने का अनुरोध किया था। चूँकि, सत्ता हस्तांतरण का कार्य मात्र चौबीस घंटे (14 एवं 15 अगस्त के मध्य) के अन्दर ही होना था। अत: उन ज्योतिषियों के समक्ष उस चौबीस घंटे की बाध्यता थी कि इसी अवधि में से वे बेहतर एवं योगकारक मुहूर्त निकालें। राष्ट्र की प्रगति को दृष्टिगत रखते हुए उन्होंने यह परामर्श दिया था कि चूंकि, 14 एवं 15 अगस्त को दिन में ग्रहस्थिति ठीक नहीं है। अत: उचित होगा कि 14 अगस्त की अर्धरात्रि में ठीक 12 बजे या उसके आस-पास आजादी प्राप्त की जाए। इस परामर्श का सम्मान पं0 जवाहर लाल नेहरू ने भी किया और सत्ता हस्तांरण का कार्य उसी के अनुरूप किया गया। अंग्रेजी की दो प्रसिद्ध पुस्तकें ''फ्रीडम एट मिड नाइट'' एवं ''मिडनाइट चिल्ड्रेन'' में भारत की आजादी की कहानी एवं आजादी के समय जन्में भारतीय बच्चों की व्यथा का चित्रण है।

सर वुड्रो वाइट, एक नवयुवक अंग्रेज था जो सन् 1944 में सर स्टैफर्ड क्रिप्स के साथ भारत आया हुआ था। उसने अपनी आत्मकथा ''दि कन्फेशन ऑफ एन आप्टिमिस्ट'' में लिखा है कि जब भारतीय राजनेताओं से कहा गया कि भारत को 14-15 अगस्त को ही आजादी लेनी पड़ेगी तब भारतीय राजनेताओं ने तत्कालीन सुप्रसिद्ध ज्योतिषियों से सलाह लेकर मध्य रात्रि का समय चयनित किया था। उसने अपने लेख ''हू डज नाट कंसल्ट स्टार्स'' में भी उक्त घटना का उल्लेख किया है, जो ब्रिटेन की प्रसिद्ध पत्रिका 'टाइम्स' के मई, 1988 अंक में छपी थी। उसने जून, 1988 के अंक में यह भी लिखा कि ज्योतिषीय कारणों को मानने से ही स्वतंत्र भारत का इतिहास पाकिस्तान से कही अधिक उज्जवल रहा तथा भारत की उपलब्धियाँ उनसे कई गुना बेहतर रही है। सन् 1988 में जब अमेरिका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन पर ज्योतिषीय परामर्श लेने के लिए प्रहार हुआ था तब भी सर वुड्रो वाइट ने अंग्रेजी के एक प्रसिद्ध दैनिक में रोनाल्ड रीगन द्वारा ज्योतिषीय परामर्श लेने को उचित ठहराते हुए अनुमोदन किया था।

अब यह प्रश्न उठता है कि तत्कालीन ज्योतिषियों द्वारा अर्धरात्रि का समय निर्धारित करने के पीछे ज्योतिषीय आधार क्या था? चौबीस घंटे के समय सीमा की बाध्यता को दृष्टिगत रखते हुए तत्कालीन ज्योतिषियों ने कतिपय महत्त्वपूर्ण ज्योतिषीय बिन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुए सत्ता हस्तांतरण का समय निर्धारित किया

था-

(1) अर्धरात्रि का महत्त्व उतना ही होता है जितना मध्य दिवस का, क्योंकि वह समय अभिजित मुहूर्त का होता है और उस समय किसी का भी जन्मशुभ माना जाता है। धर्म एवं परम्परा में गहरी अभिरूचि व श्रद्धा रखने वाले लोग भारतीय यह जानते हैं कि यहां के दो प्रमुख आराध्य देव भगवान राम एवं भगवान कृष्ण का अवतार अभिजित मुहूर्त में ही हुआ था। भगवान राम का जन्म मध्य दिवस में एवं भगवान कृष्ण का जन्म मध्य रात्रि को हुआ था। अतः बेहतर मुहूर्त के दृष्टिगत अर्धरात्रि का समय नियत किया गया था।

(2) उस क्षण वृषभ लग्न का उदय हो रहा था, जो स्थिर संज्ञक होता है। यह भूमि, मकान, अचल संपत्ति, राज्य आदि के लिए शुभ होता है। सभी लग्नों में स्थिर लग्न ही सर्वाधिक शुभ होता है।

(3) चन्द्रमा, कक्र राशि में 3 डिग्री 20 अंश को पार कर पुनर्वसु नक्षत्र से पुष्य नक्षत्र में प्रवेश कर रहा था। ब्रह्माण्ड के सभी 27 नक्षत्रों में पुष्य नक्षत्र को ही सर्वाधिक श्रेष्ठ माना गया है। अभिजित मुहूर्त में पुष्य नक्षत्र होने से वह और भीशुभ व श्रेष्ठ क्षण हो जाता है।

(4) तत्समय सिद्धि योग चल रहा था जो किसी भी मांगलिक कार्य एवं उसमें सफलता के लिए शुभ होता है।

(5) अभिजित मुहूर्त, स्थिर लग्न एवं पुष्य नक्षत्र एवं सिद्धि योग के साथ-साथ भारत को भावी दशा के रूप में मिलने वाली 18 वर्ष शनि की महादशा, 17 वर्ष बुध की महादशा एवं 20 वर्ष शुक्र की महादशा भारत को प्रगति की ओर ले जाने वाला एक दुर्लभ सौभाग्य प्राप्त हो रहा था। किसी भी व्यक्ति, संस्था अथवा राज्य के लिए प्रारंभ में यह आवश्यक होता है कि उसे अपने को स्थापित करने, अपनी मजबूत पहचान बनाने हेतु आंरभ में अनुकूल परिस्थितियाँ उसे प्राप्त हों, अन्यथा उसे बिखरने एवं खंडित होने से कोई रोक नहीं सकता। जन्मपत्री में विभिन्न योग होने पर भी संबंधित ग्रह अपनी दशा में ही अनुकूल व योगकारक फल देती है। अतः ज्योतिषविद्ों द्वारा तत् निर्धारित समय में सत्ता हस्तांतरित होने से भारत को एक लंबी अवधि तक योगकारक ग्रहों की दशा मिल रही थी। अतः उक्त ज्योतिषीय कारणों के वैज्ञानिक पक्ष को स्वीकार करते हुए डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद एवं पं0 जवाहर लाल नेहरू ने उनके परामर्श को सहर्ष स्वीकार कर सत्ता हस्तांतरण हेतु 15 अगस्त 1947 को नियत 00.01 बजे का समय स्वीकार किया था।

ज्योर्तिविद्ों द्वारा निर्धारित समयानुसार भारत का जन्म चक्र इस प्रकार है:-

15.08.1947, समय 00.01 बजे, नई दिल्ली, हिन्दू तिथि-कृष्ण चतुर्दशी,पुष्य नक्षत्र-प्रथम चरण

कारकः आत्म-सू0,अमात्य-बृह0, भातृ-शु0, मातृ-श0 पुत्र-बु0, ज्ञातृ-मं0, दारा-चं0, कारकांश-मीन।

ग्रह स्पष्ट : लग्न, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु।

8.2.33, 27.59, 3.59, 7.27, 13.40, 25.52, 22.33, 20.28, 5.44, 5.44

जन्म चक्र नवांश चक्र

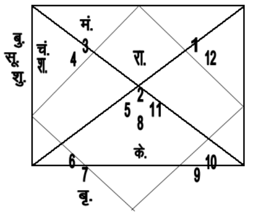

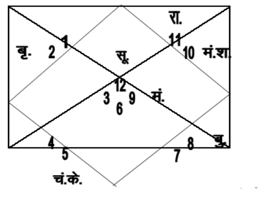

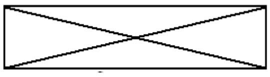

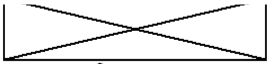

पाकिस्तान द्वारा प्राप्त की गयी आजादी का जन्म चक्र इस प्रकार है:-

14.08.1947,समय 11.21 P.M.,नई दिल्ली, हिन्दू तिथि-कृष्ण त्रयोदशी,पुष्य नक्षत्र-प्रथम चरण

कारकः आत्म-सू0, अमात्य-बृह0, भातृ-शु0, मातृ-श0, पुत्र-बु0, ज्ञातृ-मं0, दारा-चं0, कारकांश-मीन।

ग्रह स्पष्ट : लग्न, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु।

12.39.27, 27.57, 3.34, 7.26, 13.37, 25.52, 22. 31, 20.28, 5.44, 5.44

जन्म चक्र नवांश चक्र

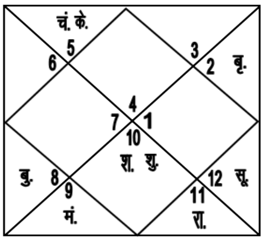

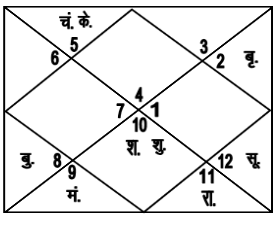

अब यह प्रश्न उठता है कि पं0 सूर्य नारायण व्यास जो उज्जैन के प्रसिद्ध ज्योतिषी थे एवं पं0 हरदेवशर्मा त्रिवेदी जो सोलन के प्रसिद्ध ज्योतिषी थे से ही डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद सत्ता हस्तांतरण के विषय पर ज्योतिषीय परामर्श लेने क्यों गये थे? आजादी मिलने के करीब बीस साल पहले -ब्रिटेन लंबे समय तक भारत पर राज नहीं कर पाएगा। ऋषि-मुनियों का यह देश तेजी से उठेगा,

समृद्ध एवं शक्तिशाली होगा। नियति ने इसे विश्व का आध्यात्मिक मार्गदर्शन की जिम्मेदारी सौंपी है- इस तथ्य का प्रथम सांकेतिक उल्लेख प्रसिद्ध भविष्यवक्ता कीरो ने किया था। आजादी से पूर्व 1946 में हुए साम्प्रदायिक दंगों के बारे में पं0 हरदेवशर्मा त्रिवेदी ने समय रहते बता दिया था। जबकि स्वतंत्रता से पूर्व पं0 सूर्य नारायण व्यास 114 रियासतों के राज्य ज्योतिषी एवं स्वतंत्रता के पश्चात् डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद से लेकर सरदार बल्लभ भाई पटेल तक के अन्तरंग सहयोगी रहे हैं और ये आजादी के बाद आचार्य नरेन्द्र देव, श्री पुरूषोत्तम दास टंडन, श्री मोरार जी देसाई, बाबू जगजीवन राम के निजी ज्योतिषीय सलाहकार भी रहे हैं। ज्योतिषाचार्य के अतिरिक्त ये एक लेखक, पत्रकार एवं सच्चे देशभक्त भी थे। गुलामी के दिनों की बात है, किसी संसद सदस्य ने असेम्बली में वायसराय से पूछा कि- क्या सरकार के पास भूकंप की पूर्व सूचना देने के लिए कोई यंत्र है? तब सरकार को कहना पड़ा था कि अभी तक विज्ञान ने ऐसा कोई यंत्र नहीं बनाया है जो भूकंप की पूर्व सूचना दे सके। तब पं0 सूर्यनारायण व्यास ने अखबारों में 300 से अधिक भूकंपों की भविष्यवाणियाँ छपवा दीं, जिसमें बिहार का विश्व प्रसिद्ध भूकम्प भीशामिल था। वह ठीक व्यास जी द्वारा निर्धारित समय पर ही आया था और इसकी चर्चा तत्कालीन अखबारों में खूब हुई थी। 31 मार्च, 1934 की ''कर्मवीर'' पत्रिका में यह भविष्यवाणी प्रकाशित की थी कि मई का महीना महात्मा जी के लिये अनिष्टकारक रहेगा। 4 मई को महात्मा गांधी, बाबू राजेन्द्र प्रसाद एवं श्री अमृत लाल ठक्कर के साथ मोटर गाड़ी पर रांची से जमशेदपुर जाने के लिए निकले। 33 मील बाद ही उनकी मोटर गाड़ी गड्ढे में गिर गई और वे बाल-बाल बचे थे। पं0 नेहरू के बारे में सन् 1934 में ही उन्होंने लिखा था कि वे भारत के भावी लेनिन या डी-विलेरा होंगे। वह भी तब जबकि तत् समय भारत में तमाम राजनीतिज्ञ दिग्गज मौजूद थे। उसे पढ़कर पं0 नेहरू स्वयं विस्मय-विमुग्ध हो गये थे। डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, पं0 सूर्य नारायण व्यास को अपने भाई की तरह सम्मान देते थे। ''इलस्ट्रेटेड वीकली'' के तत्कालीन सम्पादक द्वारा उनसे पूछे जाने पर उन्होंने बड़ी बेबाकी से स्वीकार किया था कि हॉ, मैं पं0 व्यास से न सिर्फ राय लेता हूँ बल्कि हवाई जहाज या कार में 'दायें बैठें या बायें' इस तक की सलाह उन्हीं से लेता हूँ। 1936 में सम्राट एडवर्ड के भारत आने की खबर तत्कालीन समाचार-पत्रों में खूब छपी, किन्तु पं0 व्यास ने 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के 'करेन्ट टापिक्स' में 4 फरवरी, 1936 को लिखा कि सम्राट भारत नहीं आयेंगे और उनका यह पद थोड़े दिनों में ही परिवर्तित हो जाएगा। यह भविष्यवाणी पूर्णत: सत्य हुई और इसकी चर्चा तत्कालीन अखबारों में काफी हुई। 7 दिसम्बर, 1950 के ''नव प्रभात'' अंक में श्री व्यास जी ने लिखा था कि उप-प्रधानमंत्री सरदार बल्लभ भाई पटेल के स्वास्थ्य में अत्यन्त निराशाजनक स्थिति आ जाएगी, 16 दिसम्बर तक का समय उनके लिए अत्यन्त कठिन रहेगा और सचमुच 15 दिसम्बर, 1950 को ही सरदार पटेल इस दुनिया से चल बसे। ''गांधी मरेंगे नहीं मारे जाएँगे''-जैसी स्पष्ट एवं बेबाक भविष्यवाणी करने वाले पं0 व्यास ने अपनी मृत्यु के संबंध में भी अग्रिम भविष्यवाणी मृत्यु से 10 वर्ष पूर्व 22 जून, 1965 को ही ''ऑखों देखी अपनी मौत'' शीर्षक से छपवा दी थी जो अक्षरश: सत्य हुई थी और यह घटना 22 जून, 1974 को हुई थी। इस प्रकार हम देखते है कि भारत की आजादी का मुहूर्त रहा हो या हैदराबाद के निजाम पर आक्रमण रहा हो या कश्मीर के भारत में विलय का प्रश्न रहा हो, सभी बिन्दुओं पर हमारे तत्कालीन राजनेता उनसे ज्योतिषीय परामर्श अवश्य लेते थे। श्रीमती गांधी भी बाबू सम्पूर्णानन्द एवं राजा दिनेश सिंह के माध्यम से उनसे समय-समय पर विशेष ज्योतिषीय सलाह लेती रहती थीं।

अब यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि ज्योतिषीय समय को आधार मानकर प्राप्त की गयी आजादी का भारत के विकास में क्या भूमिका रही तथा ज्योतिष की दृष्टि से बरती गयी सावधानी कितनी असरदार रही? समय साक्षी बनकर विभिन्न योग एवं दुर्योग का निर्माण करता है जिसका फल विभिन्न दशाओं में जातक को प्राप्त होता है। 18 वर्ष योगकारकशनि की महादशा, 17 वर्ष बुध की महादशा एवं 20 वर्ष शुक्र की महादशा मिलने का सौभाग्य भारत को प्राप्त हुआ। आजादी के 55 वर्षों में विभिन्न समस्याओं एवं चुनौतियों को स्वीकार करते हुए भारत ने आजादी की मजबूत नींव रखी एवं लोकतंत्र को मजबूत किया है। यहॉं आजादी के विगत साठ सालों की कतिपय भारतीय उपलब्धियों का उल्लेख किया जाना प्रासंगिक होगा-

1. अगस्त, 1947 में एक भारतीय की औसत आयु 27 वर्ष थी जो आज 65-70 वर्ष है।

2. पाकिस्तान, बांग्लादेश और अवशिष्ट भारत के भूखंड को मिलाकर कुल आबादी लगभग 35 करोड़ थी और जब भारत में आकाल पड़ता था तो लाखों लोगों की मृत्यु भूख के कारण हो जाती थी। आज अवशिष्ट भारतीय भूखंड पर लगभग एक अरब से अधिक लोग निवास करते हैं, किन्तु शायद ही कोई भूख के कारण मरता हो। आर्थिक एवं सामरिक दृष्टि से भी आज भारत उनसे कहीं ज्यादा समर्थ है।

3. संसार के दस प्रगतिशील राष्ट्रों में आज भारत को सातवां स्थान प्राप्त है।

4. अप्रैल, 1997 में विश्व बैंक ने यह घोषित किया कि अमेरीका, चीन, जापान और जर्मनी के बाद क्रय क्षमता की दृष्टि से भारत का विश्व में पांचवा स्थान है।

5. सूचना क्रांति के युग में भारत की उपलब्धियाँ

जगजाहिर हैं। भारतीय इंजीनियर विदेशों में अपनी योग्यता एवं परिश्रम के बल पर अपनी एक अलग पहचान बनाने में सफल हैं और अन्य देशों की तुलना में इनकी मांग सर्वाधिक है।

6. ज्योतिषीय दृष्टि से बरती गई सावधानी का ही परिणाम है कि लोकतंत्र ओर नागरिक अधिकार पाकिस्तान की तुलना में भारत में कई गुणा बेहतर है।

जब हम भारत और पाकिस्तान की उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तो पाते है कि 14/15 अगस्त की अर्धरात्रि को आजाद हुए भारत की स्थिति पाकिस्तान से कई गुना बेहतर है। पाकिस्तान में आज भी सही मायने में लोकतंत्र स्थापित नहीं हो पाया है जबकि भारत में लोकतंत्र की जड़े काफी गहरी व मजबूत हो चुकी है। सामरिक, आर्थिक व वैज्ञानिक क्षेत्र में भारत आज पाकिस्तान से ज्यादा सबल व सशक्त हो चुका है। पाकिस्तान की तुलना में भारत की स्वीकार्यता विश्व विरादरी में आज कही ज्यादा है, भले ही अल्प राजनैतिक लाभ के लिए कतिपय देश पाकिस्तान के पक्ष में खड़े दिखें। जिस धार्मिक कट्टरता के आधार पर पाकिस्तान का जन्म चर लग्न एवं कालसर्प दुर्योग में हुआ था, उसी धार्मिक कट्टरता व उसके जन्म के समय निर्मित दुर्योग के कारण वर्ष 1971 में बंगलादेश के रूप में पाकिस्तान का एक बार विभाजन हो चुका है और ग्रहीय स्थिति को दृष्टिगत् रखते हुए पूरे विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि भविष्य में पाकिस्तान को पुन: विभाजित होने से कोई रोक नहीं सकता। चर लग्न व लग्न संधि में पाकिस्तान का जन्म तथा लग्नेश मंगल का तृतीय भाव में स्थित होना और उसे द्वितीय एवं अष्टम भाव में निर्मित कालसर्प दुर्योग पाकिस्तान को सदैव संघर्षरत् बनाए रखेगा साथ ही वहां सही मायने में लोकतंत्र की स्थापना मील का पत्थर साबित होगी। ग्रहीय स्थिति को देखते हुए पाकिस्तान के लिए यह आवश्यक है कि वहां के शासकों को बड़े ही सूझ-बूझ एवं धैर्य से कार्य करते हुए अपने व्यक्तिगत प्रयास से राष्ट्र के समग्र विकास हेतु तत्पर रहना चाहिए। साथ ही हमेशा-हमेशा के लिए उन्हें अपने नकारात्मक सोच को बंद कर अपनी समस्त ऊर्जा का इस्तेमाल राष्ट्र के समग्र विकास के लिए करना चाहिए अन्यथा अपने नकारात्मक सोच को ही सदैव सही प्रमाणित करने की अपनी प्रवृत्ति के कारण वे अपने देश को पुन: खंडित होने से रोक पाने में असफल सिद्ध होंगे और उन्हें नियति का दंड भोगना ही पड़ेगा।

आलोच्य विषय पर चिंतन के क्रम में यह प्रश्न भी उठ सकता है कि आजादी के पूर्व एवं आजादी के बाद भारत व पाकिस्तान को हिंसा के दौर से क्यों गुजरना पड़ा साथ ही भारत को खंडित आजादी क्यों मिली? इसके पीछे ज्योतिषीय कारण क्या है? पाप-पुण्य, सही-गलत, शुभ-अशुभ, धर्म-अधर्म, प्रेम-घृणा, हिंसा-अहिंसा जैसे कर्म एक दूसरे के पूरक हैं और एक के बिना दूसरे का अस्तित्व संभव ही नहीं। प्रत्येक व्यक्ति के अन्त:मन और अन्त: चेतना में वे दोनों साथ-साथ चलते हैं जो देश-काल एवं परिस्थितियों के अनुसार भिन्न-भिन्न रूप में परिलक्षित होते हैं। इसके परिलक्षण में प्रारब्ध एवं कालचक्र की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। किसी भी घटना के घटित होने के पूर्व उसी के ही अनुरूप परिस्थितियाँ बनने लगती हैं जिनके निर्माण में प्रारब्ध एवं कालचक्र की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। दिसम्बर 1941 में पर्ल हार्बर पर जापानी हमले के बाद अमेरिका भी द्वितीय विश्वयुद्ध में कूद पड़ा और उसके द्वारा हिरोशिमा-नागासाकी पर परमाणु बम गिराने के साथ ही द्वितीय विश्वयुद्ध का पटाक्षेप हो गया। इस युद्ध के बाद एक तो ब्रिटेन भंयकर आर्थिक मंदी के दौर से गुजर रहा था वही दूसरी तरफ 9 अगस्त, 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के कारण आजादी की लड़ाई अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच चुकी था। इसी बीच ब्रिटेन के आम चुनाव में कंजर्वेटिव पार्टी के हार जाने और लेबर पार्टी के सतारूढ़ हो जाने से भारतीय आजादी का मार्ग प्रशस्त हो गया।

मेदिनी ज्योतिष में ग्रहों का गोचर निम्न स्थितियों में होने पर राज्य/राष्ट्रीय स्तर पर साम्प्रदायिक दंगे, हिंसक घटनाएं या किसी महत्त्वपूर्ण राजनेता की हत्या, सत्ता परिवर्तन या देश का विभाजन होने की संभावनाएं बनी रहती है यदि वर्ष कुंडली से भी उक्त की पुष्टि हो रही हो तथा दशा भी प्रतिकूल हो तो उक्त घटना एंश तप्रतिशत फलिभूत होती हैं, जैसे-

1. तुला राशि में जब सूर्य,शनि एवं मंगल का युतिगत संबंध बन रहा हो या यह राशि इन तीनों ग्रहों से दृष्ट हो तो हिंसक घटनाएं अवश्य घटती हैं।

2. यदि शनि-मंगल वक्री हों तो उक्त घटनाएं घटित होने की संभावनाएं और बढ़ जातीं हैं। साथ में सूर्य हो तो उसकी और पुष्टि हो जाती है।

3. सूर्य-शनि एक साथ हों और मंगल -शुक्र भी एक साथ हों तथा इन चारों के मध्य किसी भी रूप में आंशिक ही सही यदि दृष्टि संबंध बन रहा हो तो भी उक्त घटनाएं घटित होती हैं।

4. सूर्य, शनि, मंगल एवं शुक्र का संबंध यदि वृष राशि बन रहा हो तो भी उक्त घटनाएं घटती हैं।

5. यदि सूर्य,शनि एवं मंगल का संबंध वृष राशि, तुला राशि एवंशुक्र के होने के साथ ही मेष, वृष, तुला एवं वृश्चिक राशि राहु-केतु के अक्ष से आच्छादित रहने अर्थात् कालसर्प दुर्योग बनने पर उक्त घटनाएं घटित होती हैं।

6. यदि वक्री मंगल एवं वक्रीशनि के साथ सूर्य का संबंध किसी भी चर राशि के अतिरिक्त वृष, सिंह, धनु राशि

से भी बन रहा हो साथ ही यदि राहु या केतु भी साथ में हो या इन ग्रहों के कारण कालसर्प दुर्योग बन रहा हो तो भी उक्त घटनाएं घटित होती हैं।

7. इस प्रकार उपरोक्त में से एक भी प्रकार के ग्रहीय परिस्थिति बनने के साथ ही यदि दशा भी प्रतिकूल हो तो हिंसक घटना, साम्प्रदायिक दंगे, राजनैतिक हत्या, सत्ता परिवर्तन या विभाजन जैसी घटना घटने से कोई रोक नहीं सकता। किन्तु, इस तरह की परिस्थितियाँ यूं ही नहीं बनती बल्कि इसके पीछे प्रारब्ध एवं कालचक्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। 16.08. 1946 से 25.10.1947 तक भारत और पाकिस्तान में निरन्तर जारी साम्प्रदायिक दंगे और हिंसक घटनाओं के घटित होने में उपरोक्त वर्णित ग्रहीय परिस्थितियाँ एवं उससे निर्मित दुर्योग की ही भूमिका रही जिसे चाहकर भी तत्समय रोका नहीं जा सका। यही नहीं 25. 10.1912 को प्रारम्भ प्रथम विश्वयुद्ध की घटना, दिसम्बर 1941 को अमेरिका द्वारा जापान के हिरोशिमा-नागासाकी पर गिराये गये परमाणु बम की घटना, 30.01.1948 में महात्मा गांधी की हत्या, 20.10.1962 को चीन द्वारा भारत पर किये गये आक्रमण की घटना, 23.06.1980 को श्री संजय गांधी की प्लेन दुर्घटना, 03.06.1984 को आपरेशन ब्लू स्टार (स्वर्ण मंदिर) की घटना, 31.10.1984 को श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या, 25.05.1991 को श्री राजीव गांधी की हत्या, 06.12.1992 बाबरी मस्जिद की घटना, 11.09.2001 को न्यूयार्क स्थित वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमला, 27.02.2002 को गोधरा कांड, 27.12.2007 को पूर्व पाकिस्तानी प्रधानमंत्री श्रीमती बेनजीर भुट्टो की हत्या एवं 17.09.2013 की मुजफ्फरनगर दंगा जैसी घटनाओं में भी उपरोक्त वर्णित ग्रहीय योगों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

जहां तक खंडित आजादी का प्रश्न है, उपरोक्त वर्णित ग्रहीय योग एवं उससे निर्मित परिस्थितियों के कारण तत्समय हिंसा रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी और तत्कालीन राजनेताओं के मध्य आपसी सहमति भी नहीं बन पा रही थी। साथ ही नियत समय पर सत्ता हस्तांतरण भी होना था। अत: विभाजन के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं था। जब मेष, बृष, तुला एवं वृश्चिक राशि में कालसर्प दुर्योग बनता है और साथ ही उपरोक्त वर्णित सभी योगों में से एक या एक से अधिक ग्रहीय योग बनते हैं तो हिंसा व संघर्ष के उपरान्त विभाजन एवं सत्ता परिवर्तन के साथ-साथ राजनैतिक हत्या जैसी घटनाएं अवश्य घटित होती हैं। यदि सतारूढ़ होने वाले जातक की कुंडली में तत्समय निर्मित योग एवं दशा भी सहयोग प्रदान कर रहे हों तो उक्त घटनाएं अवश्य घटित होती हैं। भारत एवं पाकिस्तान के साथ तत्समय ऐसा ही हुआ था और इस कार्य को अंतिम मंजिल तक पहुंचाने में नेहरू और जिन्ना की कुंडली में निर्मित योग की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही हैं।

अब यह प्रश्न उठना भी स्वाभाविक है कि आजादी के बाद भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू ही क्यों बने? वह भी तब, जबकि प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियों का बहुमत सरदार बल्लभ भाई पटेल के पक्ष में था। अधिकांश प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियों ने तो सरदार पटेल के नाम पर अपनी सहमति भी दे दी थी। इतिहासकारों के मध्य यह हमेशा विवाद का विषय रहा है। आज देश की जनता यही जानती है कि पं0 नेहरू, महात्मा गांधी के अत्यन्त प्रिय थे और वे चाहते थे कि पं0 नेहरू ही प्रधानमंत्री बनें, इसलिए पं0 नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने जबकि वास्तव में ज्योतिषीय आधार यह था कि नियति ने महात्मा गांधी को एक माध्यम बनाकर पं0 नेहरू को प्रधानमंत्री बनाने हेतु परिस्थितियाँ निर्मित की थी। महात्मा गांधी तो निमित्त मात्र थे। प्रश्नगत पटकथा लिखी जाने के पीछे प्रारब्ध एवं कालचक्र की भूमिका एवं तत्समय निमित्त बने तत्कालीन ख्याति प्राप्त ज्योतिषियों का भी योगदान था। पं0 द्वारिका प्रसाद मिश्र ने अपने संस्मरण ''लिविंग एन इरा'' में लिखा है कि कार्यसमिति की बैठक में सरदार पटेल से जब उक्त के संबंध में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि अभी निर्णय लेता हूँ। चूँकि, उन्हें अपनी सही जन्म तिथि व समय का ज्ञान नहीं था और उन्होंने जो तिथि बताई उसके आधार पर बनी कुंडली का फलित देखा गया। उससे यह कहीं साबित नहीं हो रहा था कि वह सरदार पटेल की ही कुंडली है। अत: उनकी अन्य संभावित कुंडली का भी परीक्षण किया गया किन्तु उससे भी सही स्थिति स्पष्ट नहीं हो पायी और उसे देखकर यह कहीं प्रमाणित नहीं हो पा रहा था कि नियति उन्हें प्रधानमंत्री बनाना चाहती है। जहाँ तक पंडित नेहरू का प्रश्न है, उनकी कुंडली का तत्कालीन विद्वान ज्योतिषियों द्वारा परीक्षण कर यह सहमति दी गयी थी कि पं0 नेहरू के सिंहासनारूढ़ का समय आ चुका है और यही भारत के प्रधानमंत्री बनेंगे। आजाद भारत की कुंडली की साम्यता इन्हीं की कुंडली से बन रही थी। आजाद भारत का नेतृत्व और तत्समय भारत का विकास इन्हीं के हाथों होना था। ज्योतिष के पाराशरी सिद्धान्तों के अनुसार चतुर्थ भाव व चतुर्थेश राजगद्दी दिलाता है जबकि पंचम भाव व पंचमेश मंत्रित्व देता है। चूँकि, तत्समय पं0 नेहरू की जन्म कुण्डली के अनुसार लग्नेश चन्द्रमा की महादशा में चतुर्थेशशुक्र की अन्तरदशा चल रहा था। यह स्थिति उनकी कुंडली में निर्मित मालव्य योग को सिद्ध करने के लिए सर्वथा उपयुक्त थी। पं0 नेहरू की दशाएं भारत का नेतृत्व प्रदान करने के लिए तैयार थीं। चन्द्रमा भारत का तृतीयेश एवं शुक्र भारत का लग्नेश होकर नेतृत्व के लिए पृष्ठभूमि तैयार कर दिया था। पं0 नेहरू की कुंडली का चतुर्थेश एवं लाभेशशुक्र भारत की कुंडली का लग्नेश बनकर उन्हें लाभ

एवं यश प्रदान करने के लिए तत्पर था जिसे चाहकर भी रोका नहीं जा सकता था। जहाँ तक सरदार पटेल की कुंडली का प्रश्न है, उनकी भ्रमित व विवादग्रस्त कुंडली उन्हें महत्त्वपूर्ण नेतृत्व प्रदान तो कर रही थी एवं मंत्री पद तो दे रही थी, किन्तु प्रधानमंत्री के पद से उन्हें वंचित कर रही थी, जो तत्समय फलित भी हुआ। प्रारब्ध की नींव पर अवलंबित मानव जीवन, उनसे निर्मित योग/दुर्योग तथा संबंधित योगकारक एवं दुर्योगकारक ग्रह अपनी दशा प्रारम्भ होने से पूर्व ही भोग्य हेतु परिस्थितियाँ निर्मित करने लगती है साथ ही दशा प्रारंभ होते ही उक्त ग्रह अपने योगानुसार नियत परिणाम प्रस्तुत करने लगते हैं। यहां दशा का तात्पर्य 'समय' से है जो प्रत्येक घटना का कारक होता है। व्यक्ति तो सिर्फ अभिनय करता है और 'समय' उनसे अभिनय कराता है। इस सच को रेखांकित करते हुए किसी कवि ने ठीक ही कहा है-

''पुरूष बली नहीं होत है, समय होत बलवान।
भील्लन लुटी गोपिका, वही अर्जुन वही बाण।।''

अर्थात् मनुष्य के पास कोई बल नहीं होता। वह समय के हाथ खिलौना बना रहता है और समय ही उसे मूल्यवान व बलवान बनाती है जिसमें प्रारब्ध की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। पं0 नेहरू को प्रधानमंत्री बनाने में प्रारब्ध की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। प्रारब्ध के कोख से उत्पन्न 'समय' द्वारा ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित हुई कि चाहकर भी तत्समय उन्हें प्रधानमंत्री बनने से रोका नहीं जा सका।

इस प्रकार स्पष्ट है कि आजादी के समय पल-पल बदल रही भारत की राजनैतिक परिस्थितियाँ एवं घट रही घटनाओं के पीछे प्रारब्ध एवं कालचक्र की ही एकमेव भूमिका रही है। वह चाहे 16 अगस्त, 1946 को घटित साम्प्रदायिक दंगा रहा हो, 14/15 अगस्त की अर्धरात्रि को खंडित भारत की आजादी प्राप्त करना रहा हो या आजाद भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में पंडित नेहरू का शपथ लेना रहा हो। इसके लिए भारत की तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियाँ निमित्त बनीं और नियति ने उनसे वही करवाया जो उसे करना था।

सन्दर्भ :-

1. जन्म कुण्डली कोष, पं0: सूर्य नारायण व्यास, सुबोध पब्लिकेशन, दिल्ली, 1996
2. फलदीपिका, पं0 गोपेश कुमार ओझा, मोती लाल बनारसीदास, वाराणसी, 1975
3. ज्योतिष रत्नाकर, देवकी नन्दन सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 1939
4. उत्तर कालमृत, कालिदास, ज्योतिर्विद जगन्नाथ भासीन, रंजन पब्लिकेशन्स, 16 अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।
5. लिविंग एन इरा, पं0 द्वारिका प्रसाद मिश्र (संस्मरण)
6. योगी प्रारब्ध एवं कालचक्र, श्री के.एन. राव, वाणी पब्लिकेशन, दिल्ली।
7. लघु पाराशरी, डॉ0 सुरेश, चन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन्स, 16 अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।
8. त्रिक भवनों की गाथा, अमृत, प्रीतम/पं0 कृष्ण अशान्त, शिलालेख, 4/32, सुभाष गली, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली।
9. फ्रीडम एट मिड नाइट।
10. मिडनाइट चिल्ड्रेन
11. दि. कन्फेशन ऑफ एन आप्टिमिस्ट - सर वूड्रो वाइट
12. लेख- हू इज नॉट कन्सल्ट स्टार्स, टाइम्स, मई, 1988, ब्रिटेन
13. जनरल ऑफ एस्ट्रोलॉजी, भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली, 1998, 1999, 2000

An Honest Warning To Research Contributors

The writing of research papers is a very common phenomenon in the academic world. But now-a-days this is done without giving due care to the norms and ethics accepted for writing research papers. Even a small mistake spoils the reputation of the concerned person. We come across several stories of the violation of accepted norms. With the help of Electronic Editing, it is very common to cut ,copy and paste in Research article/ thesis formation without giving a reference of the original work. We should always keep in mind that it is not a fare practice. While reviewing, sometimes we come across such mallpractices. Such stories suggest that research scholars must be very honest and sincere in their work and must give proper attribution in case they iQuote any content from any original work.

Editor